ओ३म्

आर्य्य मार्तण्ड

❖❖ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक ❖❖

वैदिक संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प – आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

वर्ष: 88 अंक 19
आषाढ़ शुक्ला नवमी
विक्रम संवत 2071
कलि संवत 5115
5 जुलाई से 21 जुलाई 2014 तक
दयानन्दाब्द 190
सृष्टि सम्वत् 1, 96, 08, 53, 115

मुख्य सम्पादक :
पं. अमर सिंह आर्य, 9214586018
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

संपादक मंडल:
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजय सिंह भाटी, जोधपुर
डॉ. सुधीर आर्य, बगरू
आर्य शिरोमणि पं. विनोदी लाल दीक्षित
श्री हरिपाल शास्त्री, अलवर
श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
श्री अर्जुन देव चड्ढा, कोटा
श्रीमती अरूणा सतीजा, जयपुर
श्री सत्यपाल आर्य, अलवर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य, अलवर

प्रकाशक:
आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान
राजापार्क, जयपुर
दूरभाष- 0141-2621879
प्रकाशन: दिनांक 1 व 15
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता
अमर मुनि वानप्रस्थी
सम्पादक आर्य मार्तण्ड, सेढ़ का टीला
केडलगंज, अलवर (राज.)
मोबाईल- 9214586018

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशियेट्स,जयपुर
ग्राफिक्स :
भार्गव प्रिन्टर्स, दारूकूटा, अलवर
Email: bhargavaprinters@gmail.com
Email:aryamartand@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया

हिन्दू धर्म ईश्वरवादी है, पैगम्बर या अवतारवादी नहीं

संपादक- अमर मुनि

द्वारका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी के बयान पर मैं प्रसन्न होऊ या दुःख प्रकट करुँ। यह अभी तक निर्णय नहीं कर पा रहा हूँ। इसका पाठकगण स्वयं निर्णय लें। हम दो-ढाई हजार साल पहले के हिन्दुस्तान को देखें तो हमारा हिन्दू धर्म पैगम्बरवादी, अवतारवादी, सम्प्रदायवादी या गुरुडमवादी नहीं था वह तो शुद्ध ईश्वरवादी था जो मनुष्य का ईश्वर के साथ सीधा सम्बन्ध मानता था और जिसने आत्मा की अच्छी तरह से गवेषणा की है और परमात्मा की प्राप्ति के लिए सुंदर वैज्ञानिक ढंग बतलाया था। उपनिषत्काल की निर्मल-विमल और आत्मश्रोत से निकली धारा कैसी स्वच्छ और कैसी पवित्र थी उसमें किसी माध्यम - पैगम्बर या अवतार की आवश्यकता नहीं थी। वह तो प्रभु का अनुसंधान ऋषि पुत्र और पुत्रियां प्राकृतिक रमणीयता के वातावरण में अपने स्वतंत्र अनुभवों से शास्त्रों की रचना करती थी। सांसारिक भोग उन्हें अपनी ओर नहीं खींचते थे वे गुरु या पैगम्बर बनने की इच्छा नहीं रखते थे। अत्यन्त विनीत भाव से गायत्री मंत्र का जाप करते हुए यही कहते थे।

'यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः। अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।।'

वे थे ज्ञानवादी आर्य, ईश्वर के परम प्यारे। उन्होंने जीवन के लक्ष्य को समझा था कि ईश्वर के साथ मनुष्य का सीधा सम्बन्ध है; किसी वकील, बैरिस्टर, मसीहा, पैगम्बर और गुरु की बीच में आवश्यकता नहीं। मनुष्य की निर्बलताओं को वे जानते थे, इसी कारण उन कमजोरियों को जड़ से काटनेवाले नुस्खों की तलाश वे कर गए। जरा-सा भी सहारा पाकर मनुष्य अकर्मण्य हो जाता है, जरा-सी स्वच्छन्दता मिलने पर मनुष्य बुराई की तरफ भागने लगता है, इसीलिए उन्होंने कहा:

'यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति, यत्कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते।'

कैसा सुन्दर बुद्धिवाद का उपदेश है! तुम अपने पुरुषार्थ से ही आगे बढ़ सकते हो, शुद्ध जीवन तुम्हारे अपने ही पुनीत कर्मो का परिणाम है। कोई दूसरा तुम्हें नहीं बचा सकता है। जैसा तुम सोचते हो वैसा ही मुंह से कहते हो; जैसा मुंह से कहोगे वैसा ही काम करोगे, और जैसा काम करोगे वैसा ही फल पाओगे। यह है हिन्दू की विचारधारा, जिसकी बदौलत वह अपने ईश्वर से पिता-पुत्र का सीधा सम्बन्ध पैदा करता है और बिना किसी खुशामद व तौबा के अपने उद्देश्य की सिद्धि करता है।

भला, ऐसे हिन्दू धर्म के सामने पैगम्बरवाद कैसे ठहर सकता है? पैगम्बरवाद में धोखाधड़ी, मक्कारी, दम्भ और फरेब के कितने बड़े-बड़े सूराख हैं; उसमें निर्भरता की कितनी गहरी खाई है; उसमें गुलामी का कैसा गंदा नाला है; और ज्ञान का द्वार तो सदा के लिए बन्द हो जाता है।

पिछले दो-ढाई हजार साल में मजहब- अवतारवाद, गुरुडमवाद की हालत पर भी कुछ ध्यान करें जिसने हिन्दुस्तान को कैसा धर्मभीरू-कायर गुलाम, अज्ञान व पाखण्ड की ओर मोड़ दिया कि आज तक हम संभल नहीं पा रहे है और सदैव यह भय (डर) बना रहता है कि कोई नया भगवान या पैगम्बर पैदा नहीं हो जाय जिससे हमारा वर्चस्व हमारा ऐशो-आराम हमारी लूट में बंटवारा हो।

क्या आप देश की उन्नति के लिए जी रहे हैं?

इसीलिए ऐसे विवाद पैदा हो रहे है और होते रहेंगे। पिछले इतिहास उठाकर देखें तो ज्ञात होगा कि संसार में धर्म के नाम पर बड़े-बड़े युद्ध हुए है भारत में भी मत-मंतान्तरों का झगडा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से होता रहा है। इससे हिन्दू का वास्तविक संगठन छिन्न-भिन्न हुआ है। यही हमारी गुलामी का कारण बना है मैं हिन्दू समाज के शंकराचार्यो एवं बड़े-बड़े धर्म गुरुओं से निवेदन ही कर सकता हूँ कि अपने-अपने अहंकार और स्वार्थ को छोड़कर हमारी मूल हिन्दू संस्कृति जो कि वेद और उपनिषद की देन है उसे सही रूप से स्वयं अपनाओं और समाज को प्रेरित करो तभी भारत का, हिन्दू धर्म का तथा मानव मात्र का कल्याण हो सकेगा।

किसी ने ठीक ही कहा है कि चोर को क्या मारे चोर की माँ को मारो ताकि बुराई पैदा ही नहीं हो। महर्षि दयानन्द की बात याद आती है कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्णहित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सारी उन्नति का केन्द्र स्थान ऐक्य (एकता) है। जहाँ भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाय, वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते है।

अंत में यही निवेदन करुँगा कि हिन्दू धर्म पर पुनः चिंतन व अनुशीलन करने की आवश्यकता है, तभी संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बना सकेगें। जयभारत।

गुरु और गुरुडम

अब यह पर प्रश्न उठता है कि क्या हिन्दू धर्म में गुरु के लिए स्थान है ही नहीं? इसके उत्तर में हमारा नम्र निवेदन यह है कि अवश्य है, पर वहां गुरु का अर्थ आचार्य से है। प्राचीनकाल के ऋषियों ने- 'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद'- अर्थात् माता, पिता और आचार्य इन तीनों को गुरु माना है। उन्हें वे शिक्षक मानते थे; पथप्रदर्शक समझते थे और उनका श्रद्धा से आदर करते थे। परन्तु यह कभी नहीं मानते थे कि शिष्य गुरु से आगे नहीं बढ़ सकता, या उसके आचार्य जैसा संसार में न कोई हुआ और न होगा। शिष्य गुरु के ज्ञान को प्राप्त कर स्वयं उससे आगे बढ़ने का आदर्श अपने हृदय में रखता था, और जब गुरु से अधिक ज्ञानी होकर वह संसार के ज्ञानभंडार को कोई नया रत्न देता था, तो बड़ी श्रद्धा से अपने गुरु को नमस्कार कर उनका उपकार मान कहता था- 'यह मेरे गुरुजी के पुण्य प्रताप का फल है।' कृतज्ञता तो आर्यों की नस-नस में भरी हुई थी, लेकिन वे गुरु को सर्वेसर्वा मानकर ज्ञान का द्वार बंद नहीं करते थे। यह है भेद हिन्दू-गुरु-विचारधारा और वर्तमानकाल के पैगम्बरवाद, गुरुडमवाद में। पहली में सुरभि, विनय, श्रद्धा, उपकार और ज्ञान- इतने गुण मिले हुए हैं; और दूसरे में साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास, जिद, जहालत और शत्रुता भरी हुई है।

अतएव हिन्दू धर्म की यह विशेषता संसार के लिए दिव्य प्रकाश-स्तम्भ है, शांतिदायिनी है, भ्रातृभाव का अनुपम संदेश है।

- केड़लगंज, सेड का टीला, अलवर (राज.)

कार्यालय उप वन संरक्षक, अलवर

महिलाओं/गृहिणियों द्वारा अपनाए जाने वाले उपाय

* लगातार पानी चलाकर बर्तन न धोयें।
* सब्जियों व दालों के धोने के बाद बचे हुए पानी को पौधों में डालें।
* कपड़े धोने से उत्पन्न बेकार पानी का शौचालय के विभिन्न उपयोग हेतु प्रयोग करें।
* फर्श धोने की अपेक्षा पोंछा लगायें।
* कपड़े धोने के लिए वाशिंग मशीन का प्रयोग कम से कम करें, ऐसा करके हम पानी व ऊर्जा दोनों की बचत कर सकते हैं।
* कपड़ों को वाशिंग मशीन में सुखाने की बजाए धूप में सुखायें।
* सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों जैसे वाटर हीटर, लैम्प, कुकर इत्यादि को अपनायें।
* मौसम और आवश्यकतानुसार अपने रेफ्रिजरेटर का तापमान नियंत्रित करें।
* गर्म खाने को रेफ्रिजरेटर में न रखें।
* फ्रिज में रखी वस्तुओं को कुछ समय के लिए बाहर रखने के बाद ही गर्म करें।
* खाना बनाने के लिए कुकर का उपयोग करें।
* खाना बनाते समय खाने की मात्रा के अनुसार बर्तन एवं बर्नर (छोटे या बड़े) का प्रयोग करें। यदि खाना थोड़ी मात्रा में बनाना है तो छोटे बर्तन एवं छोटे बर्नर का प्रयोग करें, ऐसा करके ऊर्जा की बचत कर सकते हैं।
* खाना बनाते समय बर्तन को ढक कर रखें, जिससे आप ईंधन की लगभग 40 प्रतिशत मात्रा की बचत कर सकते हैं।
* खाना बनाते समय सारी तैयारी करने के बाद ही गैस जलायें।
* कपड़े धोने के लिए गर्म पानी का कम से कम इस्तेमाल करें।
* कचरे को कूड़ेदान में ही फेंके, इससे आस-पास का परिवेश तो सुंदर दिखेगा, साथ ही स्वच्छता का स्तर भी बढ़ेगा।
* पत्तियों, सब्जियों और फलों के छिलकों को फेंकने या जलाने के बजाए जैविक खाद बनाने के लिए प्रयोग करें।
* रसाईघर से निकले पदार्थों को पॉलीथीन में भरकर ना फेंके, इससे पर्यावरण के साथ-साथ जीव जन्तुओं को भी हानि पहुँचती है।
* घर से निकलने वाले गीले तथा सूखे कचरे को अलग-अलग करके कचरे वाले को दें।

आपके द्वारा अपनाया जाने वाला छोटे से छोटा उपाय भी पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा।

-जिला पर्यावरण समिति, अलवर

क्या आप राष्ट्र की संस्कृति सभ्यता तथा धर्म के उत्थान के लिए जी रहे हो?

सुनहरे युग की पहली किरण

टंकाराश्री अरूणा सतीजा

लम्बी गुलामी के बाद देश आजाद हुआ। भारतीयों की आंखों में सुनहरे सपने हिलोरे मारने लगे। दिल हिलोरे क्यों न मारे! महात्मा गांधी जी ने स्वराज्य तथा राम राज्य का सुहावना सपना जो दिखाया था। स्वराज्य में सुराज्य। सोने में सुहागा। ऐसा सोचने मात्र से ही सुखी जीवनके आनन्द की सुखद अनुभूति होने लगती है।

पं. जवाहर लाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बने। महात्मा गांधी जी की हत्या के बाद देश की सत्ता नेहरू जी के हाथों में कैद हो गई। नेहरू जी के बाद देश की सत्ता गांधी परिवार तक सिमट कर रह गई। फिर क्या था। प्रधानमंत्री के घर जन्मजात प्रधानमंत्री पैदा होने लगे। प्रधानमंत्री का पद आनुवंशिक बन गया। भारत का भौतिक विकास बहुत अच्छा हुआ। बड़े कल कारखानों की स्थापना हुई। लोगों का जीवन स्तर भी काफी बढ़ा परन्तु गरीब और गरीब होने लगा। चारित्रिक, नैतिक तथा मानवीय मूल्यों का ह्रास होने लगा। गांधी परिवार धनी तथा पाश्चात्य सभ्यता का पुजारी था। अति सुख सुविधाओं ने शासकों को आलसी, विलासी तथा कर्त्तव्य हीन बना दिया। जैसा राजा वैसी प्रजा। भारत की साख देश विदेश में धीरे–धीरे कम होती गई।

यू.पी.ए. सरकार के अन्तिम वर्षों के कार्य काल को यदि पूर्ण अराजकता का काल कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कानून व्यवस्था चरमराने लगी, नारी की अस्मिता तार–तार होने लगी। रक्षक भक्षक बन गये। भ्रष्टाचार, अत्याचार व्यभिचार, लूटमार, झूठ फरेब, पाखण्ड आदि जन जीवन के मुख्य अंग बन गये। मिलावट व जमाखोरी के कारण महंगाई ने लोगों की कमर तोड़ दी। शायद हम भटक गये। रामराज्य की कल्पना करते करते रावण राज्य की स्थापना कर बैठे। रावण भी सोने की लंका में रहता था फिर भी निशाचराज कहलाता था। हमारे देश की भी कुछ ऐसी ही स्थिति हो गई थी।

इस अराजकता की घोर काली अन्धकारमयी रात्रि में भारतीयों को कहीं दूर (गुजरात) से जुगनू की तरह टिमटिमाती आशा के प्रकाश की किरण दिखाई दी। सौभाग्य से 2014 के लोकसभा के चुनाव ने देश की चौखट पर दस्तक दी। शायद यह अवसर ईश्वरीय चमत्कार का शुभ सन्देश था। इस अवसर पर रामचरित मानस की यह पंक्तियां याद आ जाती है–

"जब जब होई धर्म की हानि, बाढ़े असुर और अभिमानी।
तब तब प्रभु रचि अति वीरा, हरहि सकल सज्जन की पीरा।।

चुनावी बिगुल बजा। सभी राजनैतिक दल अपने अपने दल बल के साथ इस चुनावी घमासान में कूद पड़े। 2014 का चुनाव कोई साधारण चुनाव नहीं था। सभी राजनेता अपनी वाणी के तीक्ष्ण बाणों से एक दूसरे को भेद रहे थे मानों विषैले सांपों की तरह एक दूसरे को डस लेंगे।

ऐसा प्रतीत होता था कि इस बार चुनाव की बागडोर स्वयं ईश्वर ने संभाल रखी थी। शक्ति का ध्रुवीकरण हुआ जो श्री नरेन्द्र मोदी जी का लक्ष्य बन गया। देश की सवा करोड़ की जनसंख्या को यह अटूट विश्वास हो गया कि उन की आशा का एकमात्र विकल्प "यह कर्मठ लौह पुरूष ही हो सकता है। ऐसा अनुभव होने लगा था कि भारती की आत्मा को स्वयं ईश्वर संचालित कर रहा हो। झुग्गी झोपड़ीं से ले कर राज़धानी के महलों तक के मतदाताओं ने मानों एक निश्चित स्थान पर बैठ कर श्री नरेन्द्र मोदी जी को अपना शासक बनाने का योजना बद्ध दृढ़ संकल्प किया हो।

भारतीय चुनाव के आधार धर्म, जाति, साम्प्रदायिकता, गरीबी, अमीरी, शिक्षित व अनपढ़ता की सभी संकरी दीवारें धराशायी हो गई। 16 मई 2014 के चुनाव की परिणाम बेला उतनी सुहावनी प्रतीत हो रही थी जैसी 15 अगस्त 1947 की प्रभात थी। वाराणसी में गंगा पूजन के दृश्य को देख कर ऐसा आभास हो रहा था कि सदियों (1526) के बाद आज भारतीय संस्कृति की नई किरण पुनः फूट पड़ी हो।

आज देशवासियों की महामहिम प्रधानमंत्री जी से बड़ी बड़ी आशाएं हैं। जनता से उन्होंने बड़े बड़े वादे भी किये हैं। राह अति कठिन है। हर कदम पर फूल नहीं शूल है। चारों और विरोध है, संकट है परन्तु यह भी सत्य है कि आत्मविश्वास के साथ आप आसमान भी छू सकते हैं। ऐसा ही कुछ आत्म विश्वास आदरणीय मोदी जी में भी कूट कूट कर भरा है।

गंगा माँ की मैल तो धुल जाएगी परन्तु जनमानस की आत्माओं की कलुषता कैसे मिटेगी। यह एक यक्ष प्रश्न है। मन की मैल को धोए बिना कोई भी छोटा या बड़ा कार्य करना असंभव है। लोकतंत्र में जन शक्ति ही तो बड़ी शक्ति है।

जीवन में सफल व्यक्ति वह है जो दूसरे लोगों द्वारा फेंकी गई ईंटों से एक मजबूत नीव बना लेते हैं। ऐसी कारीगरी में मान्यवर मोदी जी माहिर है निपुण है।

अगर हम भारत के भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहते हैं तो हमें आत्म निरीक्षण करना पडेगा। किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। परमात्मा ने हमें मनुष्य बनाया है तो शुभ मित्र भी बनने चाहिए। हमारे पीछे पूरी ऋषि परम्परा है। शुभ बनने में देर न करें। जिन्दगी तो केवल अपने कन्धों पर जी जाती है। दूसरों के कन्धों पर तो जनाजे उठाये जाते है।

श्री रजत शर्मा जी की "आप की अदालत" में मुसलमान भाइयों को मुसलमान भाइयों ने बडी अच्छी एवं सत्य बात समझाने का प्रयास किया है कि किसी भी चीज एवं हक को प्राप्त करने के लिए उचित पात्रता की आवश्यकता होती है। योग्य पात्र तो बनो पात्र स्वतः भर जाएगा।

क्या आप देश में बस रहे आदिवासियों तथा धर्म के उत्थान के लिए जी रहे है?

श्री अक्षय कुमार, एक्टर का एक वाक्य आज कल बार बार दोहराया जा रहा है "यदि आतंकवादी दूसरों की हत्या के लिए जान कुर्बान कर सकते हैं तो क्या हम रक्षक दूसरों की रक्षा के लिए जीवन दान नहीं कर सकते"। यदि आज हम सब इन पंक्तियों को अपने जीवन में ढ़ाल लें तो एक दूसरे के लिए जीने मरने की कसम खा लें तो मन तथा आत्मा रूपी गंगा की सफाई बडी सरलता से हो जाएगी क्योंकि मन ही तो प्रत्येक समस्या का विकल्प है। सत्य कहा है "मन चंगा तो कठौती में गंगा"।

वीर लोग लोहा गर्म होने की प्रतीक्षा नहीं करते वह तो अपनी कर्मठता रूपी हथौडे की चोटों से लोहे को पिघला देते हैं परन्तु इस के विपरीत यहां आज लोहा गर्म हैं, परिस्थितियां अनुकूल है ईश्वर भी मेहरबान है। आओ हम सब सुअवसर का लाभ उठायें, मिल जुल कर नव भारत का निर्माण कर वर्षों से संजोयें स्वराज्य तथा सुराज के अपने सपने को साकार करें। परमपिता सर्व शक्तिमान परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रत्येक भारतीय के ह्रदय में सत्य एवं ज्ञान का दीप जले।

इति, ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति ओ३म्

सामवेद यज्ञ एवं वेद प्रवचन

आर्य समाज गंगापुर सिटी द्वारा श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में

स्थान- आर्य समाज मंदिर, गंगापुरसिटी

दिनांक - 14 से 20 जुलाई 2014 तक (सात दिवसीय आयोजन)

समय- प्रतिदिन 8 से 10.30 यज्ञ, दोप. 2 से सायं 4.30 भजन, उपदेश एवं रात्रि 8 बजे से 9.30 बजे तक प्रवचन।

यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. हरिश शंकर अग्निहोत्री एवं भजनोपदेशक- श्री नरेशदत्त आर्य

ईश्वर भक्ति से मिलती है, दुखों से मुक्ति

कोटा, 23 जून। ईश्वर की भक्ति त्रिविध दुखों से मुक्ति दिलाती है। आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तीन प्रकार से मिलने वाले दुखों को दूर करने का एकमात्र उपाय ईश्वर की शरण में जाना है। उक्त विचार आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने आर्य समाज विज्ञाननगर में आयोजित वैदिक आध्यात्मिक सत्संग में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि इन तीनों प्रकार के दुखों से बचने के लिए शास्त्रों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थों को करने के लिए कहा गया है।

इस अवसर पर आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि व्यक्ति को परिवार समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध होना चाहिए साथ ही उसी अनुरूप कार्य करने चाहिए। आर्य विद्वान डॉ. के एल दिवाकर ने कहा कि व्यक्ति को केवल अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं होना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी संतुष्टि माननी चाहिए।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज को संगठित करने में अनुभवी लोगों के निर्देशन में युवाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

आर्य समाज विज्ञाननगर के प्रधान जे.एस दुबे ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया एवं मंत्री राकेश चड्ढा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

-- राकेश चड्ढा, मंत्री-- आर्य समाज विज्ञाननगर, कोटा

आर्य समाज प्रचार समिति, अलवर के तत्वावधान में 22 जून 2014 को यज्ञ व वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ

आर्य समाज प्रचार समिति, अलवर के तत्वावधान में आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ) की ओर से रविवार, दिनांक 22 जून 2014 को सायं 6 बजे से 7.30 बजे तक यज्ञ व वेद प्रचार कार्यक्रम 'आर्य समाज अरावली विहार (काला कुआँ), अलवर' में आयोजित किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. अमरमुनि- महामंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं पुरोहित व आचार्य धर्मेन्द्र थे। यज्ञ के पश्चात पं. अमरमुनि जी ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि ईश्वर भी यज्ञ मय है। मानव को यज्ञमय बनने के लिये मन, वचन एवं कर्म से श्रेष्ठ बनना चाहिए। आपने ज्ञान के लिये स्वाध्याय को आवश्यक बताया। यज्ञ में अलवर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्रीमती ईश्वरी देवी शर्मा ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया। यज्ञ में उपस्थित महानुभावों में कृष्णलाल अदलखा-प्रधान, धर्मवीर आर्य-मंत्री, सुनील आर्य-कोषाध्यक्ष, हरिशचन्द गुप्ता, रजनी मित्तल, मुन्नी देवी, लता कौशिक, सत्यपाल आर्य, राजेन्द्र शर्मा, रविन्द्र सचदेवा तथा श्रीमती गजेन्द्र बैस आदि प्रमुख थे। यज्ञ पर यजमान के रूप में कृष्णलाल अदलखा एवं श्रीमती अदलखा तथा ईश्वर चक्रवृति एवं श्रीमती चक्रवर्ती आसनी हुए। कार्यक्रम के बाद प्रसाद वितरित किया गया।

-धर्मवीर आर्य, प्रचारमंत्री- आर्य समाज समिति, अलवर

सांसद स्वामी सुमेधानन्द ने ली संस्कत में शपथ

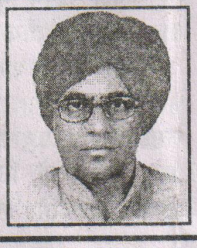

भाजपा के सीकर से नवनिर्वाचित सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, वैदिक आश्रम, पिपराली, सीकर ने संसद में सांसद के रूप में संस्कृत भाषा में शपथ ग्रहण कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका पूरा जीवन ही संस्कृत एवं सस्कृति की रक्षार्थ समर्पित है। भारतीय संस्कृति का आधार संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। भारतीय संस्कृति को बचाना है तो संस्कृत को बचाना आवश्यक है।

संस्कृत को बचाने का ही एक प्रयास स्वामीजी ने किया है। वैसे भी वेदों का प्रचार-प्रसार करना आपने अपने जीवन का लक्ष्य बना रखा है तभी तो इन्हें 'वेदमूर्ति' कहा जाता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन 'आर्य समाज' के प्रचार प्रसार हेतु ब्रह्मचर्य से सीधे ही आपने संन्यास ग्रहण किया है।

-अमरमुनि

क्या आप अपनी आत्मिक उन्नति से युक्त बौद्धिक और शारीरिक विकास के लिए जी रहे है?

दही की स्वास्थ्य वर्धक शक्ति

'आयुर्वेद शिरोमणि' डॉ. मनोहर दास अग्रावत एन.डी.
विद्या वाचस्पति (प्राकृतिक चिकित्सक)

शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग से विजातीय तत्वों को बाहर निकाल कर नव जीवन प्रदान करने वाली तथा रोग प्रतिरोधक शक्ति शरीर में एकत्र कर सुदृढ़ स्वास्थ्य एवं दीर्घायु का उपहार देने वाली वस्तु को 'अमृत' के अतिरिक्त भी कोई संज्ञा दी जा सकती है? इस विषय में दो मत होने की सम्भावना नहीं। इस रहस्यमय एवम् अमृत तुल्य वस्तु का नाम 'दही' है इससे सभी परिचित हैं।

भोजन को सुपाच्य स्वादिष्ट और स्वास्थ्य वर्धक बनाने में दही की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति में चिरकाल से दही की महत्ता को अंगीकार किया है। यज्ञ, हवन, विवाह संस्कार तथा मंदिरों में प्रसाद आदि के मांगलिक अवसरों पर दही का प्रयोग सदैव होता रहा है। शास्त्रकारों ने राम और कृष्ण के बाल्य जीवन में भोज्य पदार्थों में वरीयता क्रम में सर्वप्रथम दही के प्रयोग को ही महत्वपूर्ण एवं रुचिकर बताकर पौराणिक मान्यता प्रदान की है।

आहार विज्ञान के विशेषज्ञों का कहना है कि एक स्वस्थ बालक की आंतों में दही को जन्म देने वाले कीटाणुओं के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार के कीटाणु ही नहीं होते हैं। किन्तु उसकी आयुवृद्धि के साथ-साथ दही उत्पादक कीटाणुओं की संख्या निरन्तर घटती चली जाती है। यही कारण है कि बड़ी उम्र के लोगों को दूध देर से पचता अथवा पेट में सड़न पैदा करता है। इसलिये दूध की अपेक्षा दही को स्वास्थ्य संरक्षण के लिए अधिक लाभकारी माना गया है।

दूध पेट में पहुँचकर दही के रूप में ही जमता है और अपनी प्रभावशीलता का परिचय देता है। लेकिन दही में सुपाच्यता का गुण होने के कारण पेट को वैसी क्रिया सम्पन्न करने में अतिरिक्त भार उठाना नहीं पड़ता। इसलिये जिन्हें दूध नहीं पचता है उन्हें दही सरलता पूर्वक पच जाता है। वैज्ञानिकों द्वारा किये गये परीक्षणों से एक ही तथ्य हाथ लगा है कि दही का 70 प्रतिशत भाग शरीर को पोषक तत्व प्रदान करने के काम आता है जबकि दूध का 20 प्रतिशत हिस्सा ही इस उद्देश्य को पूरा कर सकने में सक्षम हो पाता है। दूध में कैसीन प्रोटीन और दही में लैक्टिकएसिड बैक्टीरिया होता है। कैसीन को जमाने में लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया होता है। कैसीन को जमाने में लैक्टिक एसिड ही काम आता है। इस समूची रासायनिक क्रिया को पूरा करने में कुछ अतिरिक्त गुण भी उत्पन्न हो जाते हैं। यानी दही में कैल्शियम की मात्रा दूध से ठीक 18 गुना अधिक होती है। इतना ही नहीं दही में समाविष्ट लैक्टिक एसिड जमाने वाले बर्तन की धातु से सूक्ष्म गुणों को भी सोख लेता है जो आरोग्य एवम् दीर्घायु का कारण बन जाते हैं अत: मिट्टी के बर्तन में दही जमाना अधिक श्रेयस्कर है। दूध को लम्बे समय तक सुरक्षित नहीं रखा जा सकता, पर दही को रखने में वैसी कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती है। दूध की चिकनाई से रक्त में कोलोस्ट्रॉल (घुलनशील चर्बी) की मात्रा बढ़ती है और हृदयरोग का कारण बन जाती है। दही में ऐसा नहीं होता इसलिये हृदय एवं रक्त चाप (ब्लडप्रेशर) के रोगी को दही सेवन का परामर्श चिकित्सक देते रहे हैं।

जिन देशों की आहार व्यवस्था के अंतर्गत विविध प्रकार के भोज्य पदार्थों में दही को प्राथमिकता दी गई है वहां पर स्वास्थ्य का स्तर भी सुधरा है और दीर्घ जीवन की संभावनाएं भी बढ़ी हैं। रूस के जार्जिया प्रदेश की 50 लाख की आबादी में लगभग 70 हजार से भी अधिक लोग ऐसे हैं जो अपने जीवन के 100 वर्ष बड़ी प्रसन्नता और स्वस्थता के साथ पूरे कर चुके हैं। इसके बाद बुल्गारिया का नम्बर आता है जहां पर 100 वर्ष तक जीना तो जीवन की सहज स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है। इस दीर्घायु का कारण दही ही तो है।

आयुर्वेद शास्त्र में दही को पाचक, रक्त शोधक, हृदय व मस्तिष्क को शीतलता शांति प्रदान करने वाला, यकृत की क्षमता में वृद्धि करने वाला, वात, कफ नाशक औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। अपच, अतिसार, प्रमेह और श्वेत कुष्ठ में तो यह बड़ा ही प्रभावकारी सिद्ध होता है। यही कारण है कि दही का नियमित सेवन करने वाले सदैव स्वस्थ-सानन्द बने रहते है। प्रसिद्ध पाश्चात्य विद्वान (आहार शास्त्री) 'गेलार्ड हासर' ने अपने कथन में कहा है- 'जो बहुत दिनों तक जीना चाहते है वे दही जरूर खाएँ।'

दही के कमाल जानिए- दही विटामिन डी, प्रोटीन और प्रोबायोटिक्स से भरपूर होता है, यह सभी जानते हैं।

फेशियल मॉइश्चराइजर- दही बहुत अच्छा मॉइश्चराइजर है। इससे आप चेहरे की त्वचा में चमक ला सकती है और डार्क सर्कल्स से छुटकारा पा सकती है। दही मुंहासों और एक्ने से भी लड़ता है। दही को ओट्स और शहद के साथ मिलाएं, फेस मास्क की तरह लगाएं या फिर आप सादा दही भी लगा सकती है।

प्राकृतिक स्क्रब से निखार- दही हाथ-पैरों और पूरे शरीर के लिए सबसे अच्छा प्राकृतिक स्क्रब होता है दही में ओट्स या संतरे के सूखे छिलके मिलाएं और धीरे-धीरे हल्के हाथ से गोलाई में घुमाते हुए त्वचा की मालिश करें। गुनगुने या ठंडे पानी से धो लें। इस प्राकृतिक स्क्रब से आपकी त्वचा मुलायम और नम रहेगी।

हेयर मास्क और कंडीशनर- दही बालों और सिर की त्वचा यानी स्कैल्प के लिए बहुत अच्छा माना जाता है। यह बालों में प्राकृतिक चमक लाकर उन्हें मुलायम बनाता है। आप दही को हेयर मास्क और कंडीशनर की जगह भी इस्तेमाल कर सकती है। इसके लिए सादा दही लें और सारे सिर में डाल ले। थोड़ी देर बाद गुनगुने पानी से धो लें। इससे बालों के झड़ने और दो मुंहे होने की समस्या में कमी आएगी।

सनबर्न में आराम- दही में जिंक होता है, जो सनबर्न की वजह से होने वाली जलन और खुजली में आराम पहुंचाता है। सादा और ठंडे दही की मोटी परत प्रभावित जगह पर लगाएं। बीस मिनट बाद ठंडे पानी से धो लें। आप चाहें तो इसमें अपने पंसदीदा सुगंधित तेल की कुछ बूंदे मिला सकती है।

दांत चमकाएं हफ्ते भर में- अगर आपको भी दांतों को सफेद करने के लिए घरेलू नुस्खे की तलाश है तो फिर दही का चुनाव करें। वैसे भी अगर आप किसी क्लीनिक में जाकर दांतों को सफेद करवाएंगी तो काफी खर्चा होगा। बस थोड़ा-सा दही लें और अपने दांतों पर रगड़े। हर रोज ऐसा करें। कुछ हफ्तों में आपके दांत चमक जाएंगे। ऐसा दही में मौजूद कैल्शियम और फॉस्फोरस की वजह से होता है।

अपने आपको किसी विद्या से निपुण बनाकर समाज व राष्ट्र को किसी भी ईकाई की कुछ विशिष्ट गुणों या उपलब्धियों से सेवा करना आपका उद्देश्य है या नहीं?

मुद्दा-ए-करूणा

अब तो बंद हो मांस का निर्यात

ओमप्रकाश गुप्ता, संपादक राज. टाईम्स, अलवर

सृष्टि के प्रारब्भ से ही भारत अहिंसा प्रधान देश रहा है। इस पावन धरती के कण-कण में करुणा-दया-सहिष्णुता-मानवीयता समाई हुई है। प्राचीन इतिहास के पन्ने उन महापुरुषों की गाथाओं से भरे पड़े हैं जिन्होंने प्राणी मात्र की रक्षा के लिए जीवन पर्यन्त जन-जन को उद्‌बोधन-प्रेरित और खुद को समर्पित कर दिया। त्याग, बलिदान और संयम के बल पर प्राणियों के जीवनदान हेतु न जाने कितनी महान आत्माएं अब तक संसार से विलुप्त हो चुकी। गर्व की बात यह है कि भले ही देश 21 वीं सदी की आधुनिकतम सोच के साथ आगे बढ़ रहा है परन्तु भारत की संस्कृति आज भी उसी दया व करुणा के बल पर जानी व पहचानी जाती है। भारत का गौरव तब तक सुरक्षित है, जब तक इस देश के लोगों के हृदय में अहिंसा, करुणा व दया का स्रोत विद्यमान है। धर्म का समूचा आधार ही अहिंसा व करुणा में समाया हुआ है। सभी धर्मों की पहचान दया-करुणा पर ही आधारित है। सच कहूं तो मनुष्य के जीवन में यदि दया-करुणा-अहिंसा की भावनाएं विद्यमान नहीं तो फिर वह मानव कहलाने का अधिकारी हो ही नहीं सकता। करुणा हमारी माँ है और माँ से जुदा व्यक्ति फिर दानव ही हो सकता है। यह बेहद अफसोस का पहलू है कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जिस भारत को अहिंसा के बल पर आजादी दिलाई, आज उसी भारत की धरा पर हर वर्ष पशु हिंसा का तांड़व निरन्तर बढ़ रहा है। शासक कोई भी रहे लेकिन उन्होंने उन मूक प्राणियों के क्रंदन को अपने भीतर अनुभव नहीं किया जिनका यांत्रिक कत्लखानों में बहुत क्रूरता के साथ कत्लेआम हो रहा है। खून की नदियां बह रही हैं और उनकी चीत्कार से प्रकृति कांप रही है। उसके अनेक भयावह स्वरूप विभिन्न रूपों में कई बार सामने आते रहे, आ रहे है लेकिन आँखों पर काला चश्मा लगाए बैठे संवेदनहीन व हृदयहीन सत्ताधीशों और उनके स्वार्थी हुक्मरानों को कुछ नजर नहीं आता। उसी का दुष्परिणाम है कि अहिंसा प्रधान देश भारत अब दुनिया का सबसे बड़ा मीट एक्सपोर्ट व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र बन गया। प्रतिदिन लाखों पशु-पक्षी खून और मांस के चटखोरों के लिए तड़फा-तड़फा कर मारे जा रहे है। धरती रक्त रंजित हो रही है और हुक्मरान राक्षसों की तरह ठहाके लगाते आए है। नेता जेब भरते रहे। ऐसी विकट स्थिति में यह शुभ संकेत है कि पहली बार देश की सत्ता में पूर्ण बहुमत के साथ हिन्दुवादी सोच और भारतीय संस्कृति की खुली पैरोकारी करने वाली पार्टी काबिज हुई है। इससे पहले सत्ता में बहुत वर्षों तक जिन लोगों का वर्चस्व बना रहा, कहने को वे अपने को 'गांधी' के अनुयायी कहलावाते रहे मगर उनकी कथनी-करनी में अंतर इतना बढ़ता गया कि माँस के कारोबारी पनपते चले गए। जब सत्ता में बैठे बड़े-बड़े लोग और उनके 'आका' ही खुद मांसाहारी हो, तब अहिंसा, दया, करुणा का महत्व वे क्या समझ पाएंगे। यह फख्र करने योग्य बात है कि इस बार देश को धरती से जुड़ा एक साधारण और पूर्ण शाकाहारी व्यक्ति प्रधानमंत्री के रूप में मिला है। उनका यह पहला कदम बहुत सराहनीय व अनुकरणीय है जिसमें उन्होंने अपने सभी सरकारी भोजों में 'मांसाहार' को पूर्णतया प्रतिबंधित कर दिया और शाकाहारी भोजन को ही प्राथमिकता देने के आदेश दिए। निश्चित ही उनकी इस साहसिक पहल से देश के उन करोड़ों लोगों को बहुत खुशी अन्तहकरण से हुई है जो जीव दया व करुणा के पक्षधर है। स्वर्ग में बैठे पूज्य 'बापू' भी पहली बार ऐसी करुण भावना देख जरुर मुस्कुराए होंगे और आशीष भी दी होगी। अहिंसक विचारधारा के पोषक मोदी से देश के शाकाहारी लोगों को अब बहुत अपेक्षाएं हैं जिस पर उन्हें खरा उतरने के लिए 'अंगद' की तरह पांव रोपने ही होंगे। मांस का निर्यात जिस तीव्र गति से बढ़ा है, उस तथ्य से वे भी भली प्रकार वाकिफ हैं। स्थिति इतनी विकट हो गई है कि अब दुधारू पशु तक लगातार कम होते जा रहे हैं। गर्भवती भैंसें व गायों तक का बहुत क्रूरता से कत्ल हो रहा है। पशु धन कम होने से पूरे देश में नकली व मिलावटी घी-दूध का धंधा इतना बढ़ चुका कि लाखों लोग भिन्न-भिन्न तरह की घातक बीमारियों से त्रस्त है। कई चिकित्सकीय व जाँच विशेषज्ञों की शोध रिपोर्टों से यह बात पूरी तरह प्रमाणित हो चुकी है कि मिलावटी दूध व घी जान लेवा सिद्ध हो रहा है। जब दुधारु पशु ही नहीं रहेंगे, फिर दूध कहां से आएगा ? एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत में जितनी मांस की आपूर्ति हो रही है, उसमें नब्बे गुना से भी अधिक मांस विदेशों को निर्यात हो रहा है। यानी विदेशी मुल्कों की पूर्ति के लिए भारत के निरीह मूक प्राणी पर लगातार खंजर चल रहे हैं। मीट व्यवसायियों को पिछली हुकूमत के लोगों ने इतनी भारी छूट, सब्सिड़ी व सुविधाएं प्रदान कर रखी है जिसके कारण मांस निर्यात का धंधा पिछले दस वर्षों में ही सौ गुना अधिक हो गया। नए-नए यांत्रिक कत्लखानों की संख्या बढ़ती चली गई। डिब्बा बंद मांस दुनिया भर में सप्लाई हो रहा है और खाल व हड्डियों के व्यवसाय में निरंतर वृद्धि हो रही है। अब गाय-भैंस-पाड़े-बछड़े ही नहीं वरन् ऊँट-भेड़-बकरी-घोड़े-मोर-कबूतर-चिड़िया जैसी छोटे-छोटे पक्षियों को भी मारा जा रहा है। स्वार्थी तत्वों ने 'नील गाय' जैसी शाकाहारी वन्य प्राणी को भी नहीं बख्शा और वह भी खाल-मांस के लालच में शिकारियों की भेट चढ़ती जा रही है। एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2013-14 में 26500 करोड़ रुपए का 14.50 लाख टन मांस भारत से निर्यात किया गया जिस पर तत्कालीन केन्द्र सरकार ने 10150 करोड़ की सब्सिड़ी प्रदान की। चौंकाने वाला तथ्य यह है कि इतने मांस के निर्यात हेतु एक करोड़ 32 लाख भैसों का वध किया गया। हकीकत में अब तक मूक पशुओं का क्रंदन किसी सरकार व उनके आकाओं ने नहीं सुना लेकिन अब भारत को अपनी पावन संस्कृति की रक्षा के लिए तुरन्त प्रभाव से कम से कम मांस निर्यात व पशु वध पर रोक लगाने में प्रभावी पहल करनी चाहिए। मेरा ऐसा मानना है कि लाखों-करोड़ों पशुओं की इससे प्राण रक्षा होगी और उनकी आशीष सरकार के लिए बहुत बड़ी दुआ का काम करेगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए यह अग्नि परीक्षा का वक्त है क्योंकि मीट एक्सपोर्ट माफिया बहुत ताकतवर बन चुका है। वह सत्ता की

प्रण करते है कि अपनी संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे।

ऊँचाइयों तक अपना असर रखता आया है। साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति पर यह मीट लॉबी सांसदों व मंत्रियों को भी जेब में रखती रही है लेकिन जब एक सच्चा व करुणावान सपूत सत्ता के शीर्षस्थ सिंहासन पर विराजित हो चुका, तब उनसे यह उम्मीद की जाती है कि वे अपने भारत की धरती से मांस निर्यात के क्रूर धंधे को अब नहीं होने देंगे। चंद चांदी के टुकड़ों (विदेशी मुद्रा) के लिए हमें किसी भी सूरत में अपने पशु धन का वध स्वीकार नहीं होना चाहिए। काश! वह दिन भी आए, जब भारत में संचालित यांत्रिक व अन्य सभी छोटे-बड़े कत्लखानों पर प्रतिबंध लगे और उनकी सब्सिड़ी व सुविधाएं बंद हो। फिर रसोई गैस पर सब्सिडी भी खत्म करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यूं भी अभयदान से बड़ा कोई धर्म भी नहीं होता। उसका सबसे बड़ा हित व लाभ फिर यह होगा कि भारत की वसुधा अपने गौरव को पुनः हासिल कर पाएगी। राम राज्य का सपना साकार होने का श्रीगणेश इस लिहाज से होगा कि फिर किसी भी जीव की हत्या नहीं वरन् उन्हें जीवनदान मिलेगा। हकीकत में दूध-दही की नदियां बहने लगेंगी। मिलावट पर भी अंकुश लगेगा। पशु धन की सुरक्षा ही तो भारत का मूल प्राण है। प्रधानमंत्री मोदी व उनकी सरकार को जागृत करने के लिए आमजन, खासकर सभी अहिंसक, शाकाहारी जीव दया के पक्षधरों को अपने-अपने स्तर या सामूहिक रूप से एकजुट होकर मांस निर्यात व पशु वध पर रोक व उन्हें दी जा रही सुविधाओं, सब्सिडी को बंद कराने के लिए अपनी आवाज बुलन्द करनी चाहिए। याद रहे- किसी की प्राण रक्षा के लिए उठाई गई आवाज व कदम 100 यज्ञों के पुण्य से भी बढ़कर है।

-तिलक मार्केट के पास, अलवर

आर्य समाज मरजीवी तह. निम्बाहेडा जिला चितौड़गढ़

दो वर्ष पूर्व ही स्थापित हुए आर्य समाज मरजीवी तहसील निम्बाहेडा जिला चित्तौड़गढ़ का दो दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम श्री ओम प्रकाश आंजना उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संयोजन में आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्र सिंह जी आर्य के द्वारा आर्य समाज मरजीवी में कराया गया।

यह कार्यक्रम कई ग्रामों में रखा गया। विदित हो कि ये प्रति वर्ष प्रचार कार्यक्रम चलाते रहते है। इस अवसर पर आर्य समाज का नया निर्वाचन कराया गया जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

* अध्यक्ष- गणपत जी पटेल (आर्य)
* उप प्रधान- कारूलाल जी आर्य (गायरी)
* मंत्री- गणपत जी आर्य
* उप मंत्री- विक्रम जी आर्य (आंजना)
* कोषाध्यक्ष- कमल जी आर्य (आंजना)
* निरीक्षक- मानसिंह आर्य (आंजना)
* पुस्तकाध्यक्ष- कारूलाल आर्य

सदस्य- सुनील आंजना, नाथुलाल सेन, प्रेम बाई (पत्नी री गणपत जी पटेल (आर्य), दशरथ (पुत्र श्री लाल जी), मोहन आर्य, नेपाल आंजना (पुत्र श्री जसराज जी) -ओम प्रकाश, उप प्रधान आर्य प्रति. सभा राज.

आर्य समाज मुण्डावर (अलवर) का आर्य महा सम्मेलन-2014

आर्य समाज मुण्डावर जिला अलवर का आर्य महा सम्मेलन दिनांक 27-28 जून 2014 को श्री जगदीश प्रसाद आर्य उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की अध्यक्षता में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। जिसमें जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आर्यजन पधारे। सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री अमर मुनि मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, आचार्य श्री विश्वपाल गुरुकुल दाधिया, भारत के प्रसिद्ध कवि रत्न पंडित नरदेव आर्य-भरतपुर, श्री हरिसिंह आर्य-गादौज, श्री सुरेन्द्र जटगावडा, श्री हरिसिंह तिनकीरूड़ी (भजनोपदेशक), श्रीमती नीलम राठी आर्या-बहरोड, श्री बलवंत भजनोपदेशक आदि पधारे। यज्ञ के ब्रह्मा श्री जगदीश प्रसाद आर्य ने प्रतिदिन यज्ञ कराया।

- चुन्नी लाल आर्य, मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा

लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ें

कोटा, 1 जुलाई। आर्य समाज कोटा ने अन्नपूर्णा विद्यालय कोटा के नवसत्र के प्रथम दिवस का प्रारंभ यज्ञ से किया। यज्ञ से पूर्व मुख्य यजमान दंपत्ती विद्यालय के निदेशक डॉ. रामाराव प्राचार्या डॉ. लक्ष्मी राव, विद्यालय के अध्यापक-अध्यापिकाओं सहित छात्र-छात्राओं ने वेद मंत्रों से अरविन्द पाण्डेय के पौराहित्य में आहूतियां दी।

कार्यकम का प्रारंभ वैदिक प्रार्थना मंत्रों से भावार्थ सहित सामूहिक रूप से गान किया। उपस्थित सभी ने ध्यान लगाकर प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण किया, तत्पश्चात गायत्री मंत्र लिखित केसरिया रेशमी पटके पहनाकर सभी का स्वागत किया गया। कार्यकम में सभी छात्र-छात्राओं ने प्रसन्नता व उत्साह के साथ गायत्री मंत्र उच्चारण करते हुए यज्ञ में आहूतियां दी।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि बालक अपना लक्ष्य निर्धारित करें। उसी के अनुसार जीवन के कार्यकम बनाएं, आलस्य को न आने दें। सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें। आर्य विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक ने कहा कि विद्या से जीवन में विनय आता है। विनय से बालक प्रिय बनता है व उसे आशीर्वाद की प्राप्ति होती है।

आर्य समाज विज्ञाननगर कोटा के प्रधान जे.एस दुबे ने कहा कि अपना जीवन राष्ट्र के लिए बनाएं। राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना से कार्य करें, राष्ट्रभक्त बनें। जिला आर्य समाज के मंत्री कैलाश बाहेती ने भी विचार व्यक्त किये।

विद्यालय की प्राचार्या डॉ. लक्ष्मी राव ने कहा कि यज्ञ के प्रारंभ से अध्यापिकाओं एवं बालक-बालिकाओं को भी अच्छा लगा। यज्ञ से बच्चों में संस्कार एवं सकारात्मक सोच आती है। विद्यालय निदेशक डॉ. रामाराव ने धन्यवाद देते हुए कहा कि समय-समय पर आर्यसमाज द्वारा छात्रों की उन्नति के लिए यज्ञ के साथ विचार दिये जाते हैं। बच्चों में मानव बनने के गुण आते हैं। शांतिपाठ के साथ कार्यकम का समापन हुआ।

अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय सचिव

वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे।

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / FN-221 / 2014 - 2016 / आर. एन. आई नं. 10471/60

श्रीमती मिथलेश जी के निधन पर भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

धर्मपत्नी श्री ज्ञानेन्द्र आर्य जी

(पूर्व प्रधान- आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर)

सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्व. पं. हेतराम आर्य जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री ज्ञानेन्द्र आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती मिथलेश जी का गत सप्ताह दिनांक 19 जून 2014, गुरुवार को आकस्मिक निधन हो गया। वे वैदिक धर्म एवं सांस्कृतिक गुणों से आप्त सरल, सहृदया, शीलवान आदर्श महिला थी। सुसंस्कारित परिवार की संरचना एवं श्रेष्ठ संस्कारों के परिमार्जन व अभिवर्धन में माँ की श्रेष्ठ भूमिका होती है। अत: पारिवारिक वातावरण के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धर्म परायण होने के कारण पूजा-अर्चना, ईश्वरोपासना और आत्म निवेदन उनकी नित्य क्रियाएँ थी। पतिदेव श्री ज्ञानेन्द्र आर्यजी के सौहार्दमय आत्मीय सहयोग के बल पर उन्होंने अपने कार्य कौशल से आदर्श परिवार का निर्माण किया है। उनके जीवन में सत्य, सेवा और साधना की त्रिवेणी बहती थी। उन्हीं आदर्श संस्कारों की निरंतर वृद्धि उनके परिवार में परिव्याप्त है। सबके साथ स्वयं को समायोजित कर पारिवारिक संस्कृति को बनाये रखना उनकी उदारता का परिचायक है। जीवन मूल्यों एवं उच्च आदर्शों के प्रति वे सदैव जागरूक रहा करती थी।

यद्यपि उन्होंने किसी प्रकार की उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त नहीं की थी किन्तु जिन उच्चादर्श संस्कार उन्होंने अपने बच्चों में अंकुरित किये हैं उनसे प्रतीत होता है मानो वे सुसंस्कारित पाठशाला की प्रधाना रही हों। अलवर की समस्त आर्य समाजें एवं जिला सभा अलवर की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

बृजेन्द्र आर्य, मंत्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर
एवं अनुज- श्री ज्ञानेन्द्र आर्य (पूर्व प्रधान-आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर)

आदर करो बुढ़ापे का, जो अनुभव का सागर है,
दोपहरी की थकन, शाम को मिटे जहाँ, वह घर है।
सीखो इसकी भूलों से इसका अनुभव अपनाओ,
इसीलिए अपने अग्रज को सादर शीश नवाओ।

सत्यपाल आर्य, अलवर

आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा निःशुल्क हड्डी जोड़ दर्द निवारण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा आयोज्य नि:शुल्क हड्डियों की बी.एम.डी. जाँच एवं सभी प्रकार के जोड़ों के दर्द की जानकारी, निदान एवं उपचार सम्बन्धित सलाह डॉ. राहुल खन्ना ने दी। जोहन्सन एंड जोहन्सन कम्पनी के श्री राकेश चौधरी एवं श्री देवेन्द्र कुमार ने बी.एम.डी. जाँचें सम्पादित की। फिजियोथेरेपिस्ट श्री बीरेन्द्र कुमार ने जोड़ दर्द निवारणार्थ सम्बन्धी कसरतों की क्रियात्मक जानकारी व सलाह दी। इस शिविर में 196 महिला-पुरुष लाभान्वित हुए।

प्रारम्भ में डॉ. खन्ना ने दृश्य-श्रव्य माध्यम से ओस्टियोपोरोसिस पर जानकारी दी। रोगियों के रोगों से सम्बन्धित शंकाओं का भी समाधान किया गया। समाज प्रधान श्री भंवरलाल ने स्वागत किया एवं शिविर संयोजक डॉ. तापड़िया ने शिविर की जानकारी देते हुये डॉ. खन्ना आदि का परिचय दिया। धन्यवाद की रस्म आर्य समाज मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने अदा की। कार्यक्रम संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- राम दयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

स्वास्थ्य के बाहर सूत्र

1. प्रात: दो गिलास पानी बैठकर पीयें।
2. प्रात: और रात्रि एक-एक चम्मच दाना मेथी पानी के साथ निगलें।
3. दिन में दो बार नींबू पानी पियें।
4. भोजन में दोनों समय चोकर युक्त आटे की रोटी बिना घी के लें और साथ में सब्जी और सलाद आदि अधिक मात्र में लें।
5. भोजन के बाद दोनों समय एक-एक चम्मच आंवला चूर्ण लें।
6. खाना खूब चबा-चबा कर खायें।
7. भोजन के पौने घंटे बाद पानी पियें।
8. स्नान के बाद बदन की मालिश करके सुखायें।
9. इलाज के दौरान मैदा, मावा, बेसन, मिठाई, नमकीन ब्रेड, बिस्कुट और तले हुए पदार्थ न लें।
10. घी, शक्कर और नमक कम खायें।
11. नित्य रीढ़ के घुमावदार व्यायाम करें।
12. नित्य हथेली और पगथली की सरसों के तेल के साथ मालिश करें।

संकलन- धर्मवीर आर्य, अलवर

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
सम्पादक एवं प्रकाशक अमरसिंह आर्य, मंत्री- आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

प्रेषक :
सम्पादक, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर - 302004

यूको बैंक A/c No. : 18830100010430 तिलक नगर, जयपुर

प्रेषित

विशेष – आर्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों मे व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। उनसे संम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।